Rohtas Mahila College, Sasaram. 09-07-21
Dr. Aman Murmu, Dept of Psychology, B.A. part III Dr-I

(Topic- बुद्धि के सिद्धान्त Theories of Intelligence):-
जिस तरह बुद्धि की परिभाषा के ~~सिलसिले~~ सिलसिले में मनोवैज्ञानिकों के बीच मतभेद रहा है और आज भी है, उसी तरह बुद्धि के स्वरूप (Nature) तथा इसकी संरचना के सम्बंध में भी मतभेद रहा है। इस विवाद के कारण कई सिद्धान्तों का विकास हुआ, जिसे बुद्धि के सिद्धान्त कहते हैं। इसमें कुछ तो गौण सिद्धान्त हैं और कुछ प्रधान सिद्धान्त हैं। हम यहाँ मुख्य रूप से प्रधान सिद्धान्तों की व्याख्या करेंगे।
बुद्धि के स्वरूप एवं संरचना के सम्बंध में निम्नलिखित सिद्धान्त अधिक महत्वपूर्ण हैं, जो वास्तव में कारण विश्लेषण पर आधारित हैं।-
स्पीयरमैन का द्वितत्व सिद्धान्त:-
बुद्धि के स्वरूप को समझने की दिशा में स्पीयरमैन (Spearman, 1863-1945) ने ~~एक~~ एक ठोस कदम उठाया। वे ब्रिटेन (Britain) के एक प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक थे। उन्होंने 1904 में यह समझने का प्रयास किया कि बुद्धि कितने कारकों या तत्वों से मिलकर बनी है। अपने अध्ययनों के आधार पर उन्होंने 1927 में बुद्धि के दो कारकों या तत्वों का उल्लेख किया। एक को सामान्य तत्व (General factor) और दूसरे को विशिष्ट तत्व (Specific factor) की संज्ञा दी। इसलिए उनके ~~के~~ सिद्धान्त को द्वितत्व सिद्धान्त कहते हैं।
स्पीयरमैन ने सामान्य तत्व की व्याख्या करते हुए कहा है कि बुद्धि का यह एक ऐसा अंश है जो व्यक्ति के सभी संज्ञानात्मक कार्यों को सामान्य रूप से प्रभावित करता है। इस प्रकार उन्होंने सामान्य तत्वों को एक ऐसी मानसिक शक्ति माना जो ~~क~~ व्यक्ति के सभी संज्ञानात्मक कार्यों में समान रूप से सहायता करती है।
दूसरी बात यह है कि बुद्धि का अधिकांश भाग सामान्य तत्व से सम्बंधित है। इसी शब्दों में सामान्य तत्व ही बुद्धि का प्रधान रूप है। यदि बुद्धि को एक इकाई मान लिया जाए तो इसमें सामान्य तत्व का हिस्सा लगभग 95% होगा।

तीसरी बात यह है कि सामान्य बुद्धि की मात्रा सभी व्यक्तियों में निश्चित रहती है।
स्पीयरमैन ने विशिष्ट तत्व (Specific factor) की व्याख्या करते हुए कहा है कि बुद्धि का यह बहुत छोटा रूप है। यदि बुद्धि को एक इकाई मान लिया जाए तो इसका हिस्सा ~~लगभग~~ लगभग 5% होगा। दूसरी बात यह है कि विशिष्ट तत्व की मात्रा निश्चित नहीं रहती है। एक ही व्यक्ति में इसकी मात्रा भिन्न भिन्न परिस्थितियों में भिन्न भिन्न हो सकती है। तीसरी बात यह है कि इस योग्यता पर शिक्षण या प्रशिक्षण का प्रभाव पड़ता है
स्पीयरमैन ने बुद्धि के सामान्य तत्व तथा विशिष्ट तत्व को सिद्ध करने के लिए सहसम्बंध विधि (Correlation ~~method~~ method) निकाला। इसे कोटि अन्तर सहसम्बंध विधि (Rank difference correlation method) कहते हैं। इस विधि द्वारा उन्होंने व्यक्ति के भिन्न भिन्न संज्ञानात्मक कार्यों के बीच सहसम्बंध निकाला।
उन्होंने देखा कि एक व्यक्ति के भिन्न भिन्न कार्यों के बीच काफी गहरा सहसम्बंध होता है। यदि व्यक्ति एक कार्य में काफी सफल प्रमाणित होता है तो वह दूसरे कार्य में भी लगभग उतना ही सफलता प्राप्त करता है। यदि व्यक्ति एक कार्य में साधारण ~~सफलता प्राप्त~~ करता है रूप से सफल होता है तो वह अपने दूसरे कार्य में भी लगभग उतनी ही साधारण सफलता प्राप्त करता है।
स्पीयरमैन ने विशिष्ट तत्व या विशिष्ट योग्यता को प्रमाणित करने के लिए भी सहसम्बंध विधि का सहारा लिया। उन्होंने देखा कि एक व्यक्ति के भिन्न भिन्न संज्ञानात्मक कार्यों में धनात्मक सम्बंध होते हुए भी पूर्ण सहसम्बंध (R = +1.00) नहीं होता है। दूसरे शब्दों में व्यक्ति के कार्यों में बड़ी समानता होते हुए भी कुछ न कुछ ~~अन्तर~~ अन्तर अवश्य रहता है।
स्पीयरमैन के द्वितत्व सिद्धान्त के अनुसार सामान्य बुद्धि

Scanned with CamScanner

"एक" होती है। जबकि विशिष्ट बुद्धि अनेक होती है। दूसरे शब्दों में सामान्य तत्व को कई खण्डों में विभाजित नहीं किया जा सकता है जबकि विशिष्ट तत्वों को कई खण्डों में विभाजित किया जा सकता है। भिन्न भिन्न विशिष्ट योग्यताओं में कोई पारस्परिक सम्बंध नहीं होता है।

स्पीयरमैन के अनुसार सामान्य योग्यता ही वास्तविक अर्थ में बुद्धि है। इसलिए उन्होंने इस बात पर बल दिया कि एक अच्छे परीक्षण में ऐसे पदों की संख्या पर्याप्त होनी चाहिए जो व्यक्ति के सामान्य योग्यता को माप सके। यदि परीक्षण के पदों या एकांशों (Items) के बीच अधिक सहसम्बंध हो तो समझना चाहिए कि उस परीक्षण में सामान्य योग्यता को मापने की क्षमता है।

स्पीयरमैन का द्वितत्व सिद्धान्त के गुण :—

(i) इस सिद्धान्त का शोध मूल्य दूसरे सिद्धान्तों की तुलना में कहीं अधिक है। इस सिद्धान्त से प्रभावित होकर अनेक मनोवैज्ञानिकों तथा शिक्षाशास्त्रियों ने बुद्धि के क्षेत्र में शोध कार्य शुरू कर दिया और बुद्धि के स्वरूप तथा बुद्धि को मापने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

(ii) बुद्धि के स्वरूप को निर्धारित करने तथा बुद्धि परीक्षण के निर्माण में इस सिद्धान्त को अग्रता प्राप्त है। स्पीयरमैन ने 1927 में कई वर्षों के प्रयासों के बाद बुद्धि के द्विकारक सिद्धान्त को स्थापित किया। इस सिद्धान्त को बुद्धि का प्रथम व्यवस्थित सिद्धान्त माना जाता है।

(iii) इस सिद्धान्त का एक गुण यह भी है कि अधिकांश बुद्धि परीक्षणों का निर्माण इसी सिद्धान्त की अभिधारणाओं के आधार पर किया गया और आज भी किया जाता है। इस सिद्धान्त की मुख्य अभिधारणा सामान्य बुद्धि है। अतः इसी अभिधारणा या विश्वास को ध्यान में रखकर बुद्धि परीक्षण बनाये गये या बनाये जाते हैं। इससे इस सिद्धान्त का व्यावहारिक महत्व सिद्ध होता है।

(iv) इस सिद्धान्त के आधार पर व्यक्ति के व्यवहारों या निष्पादनों के बीच समानता की व्याख्या संभव होती है। यह एक वास्तविकता है कि व्यक्ति के व्यवहारों या निष्पादनों में बहुत समानता पाई जाती है

(v) इस सिद्धान्त के आलोक में व्यक्ति के व्यवहारों या निष्पादनों के भिन्नता की व्याख्या भी संभव है। व्यक्ति के भिन्न-भिन्न निष्पादनों में समानता होते हुए भी कुछ न कुछ भिन्नता अवश्य पाई जाती है।

(vi) इस सिद्धान्त के आधार पर वैयक्तिक भिन्नताओं की व्याख्या भी काफी अंशों में संभव है। स्पीयरमैन ने वैयक्तिक भिन्नताओं की व्याख्या दो आधारों पर की है।

(A) उन्होने कहा कि भिन्न भिन्न व्यक्तियों के सामान्य तत्व यानी सामान्य बुद्धि में अंतर होता है

(B) उन्होंने यह भी कहा है कि भिन्न भिन्न व्यक्तियों के विशिष्ट तत्वं यानी विशिष्ट योग्यताओं में भी अंतर होता है। अतः यही कारण है कि भिन्न भिन्न व्यक्तियों के निष्पादनों में भिन्नता का होना स्वाभाविक है।

स्पीयरमैन का द्वितत्व सिद्धान्त के दोष —

(i) एक आलोचना यह की गई कि बुद्धि में केवल दो तत्व नहीं है थॉर्नडाइक (Thorndike, 1926) ने इस सिद्धान्त की आलोचना करते हुए कहा है कि बुद्धि की संरचना दो तत्वों से नहीं बल्कि अनेक तत्वों से हुई है।

(ii) इस सिद्धान्त के विरुद्ध दूसरा आरोप यह लगाया गया कि स्पीयरमैन ने व्यक्ति के संज्ञानात्मक कार्यों के बीच सहसम्बंध को ही सामान्य योग्यता या सामान्य तत्व का आधार माना है परन्तु उनका यह आधार बहुत कमजोर है।

(iii) पीयर्सन (pearson) ने इस सिद्धान्त की आलोचना करते हुए कहा है कि यह सिद्धान्त बहुत थोड़े प्रयोगात्मक प्रमाणों पर आधारित है। इसलिए इसे अधिक विश्वसनीय नहीं माना जा सकता है।

(iv) इस सिद्धान्त में यह भी आपत्ति लगाई गई है कि बुद्धि मापकों के बीच अन्तःसम्बंधों की व्याख्या केवल ~~का~~ सामान्य तत्व के

Scanned with CamScanner

आधार पर संभव नहीं है। आपको या परीक्षाओं के बीच ~~अन्तः~~ अन्तः सम्बन्धों से ~~इस~~ पता चलता है कि सामान्य तत्व के अलावा कुछ अन्य तत्व भी है।

स्पीयरमैन (Spearman) 1927 ने इन कमी को महसूस की और इस सिद्धान्त को संशोधन ~~न~~ किया और उन्होने इस सिद्धान्त में अतिरिक्त समूह तत्वों को जोड़ा। फिर भी यह स्पष्ट हुआ कि स्पीयरमैन के सिद्धान्त में कुछ कमी के बावजूद बुद्धि के स्वरूप तथा संरचना की व्याख्या करने में यह सिद्धान्त एक बड़ी हद तक सक्षम है। यह एक खास हकीकत है कि अन्य बातें समान रहने पर एक प्रतिभाशाली ~~बच्चे~~ बच्चे की उपलब्धि भिन्न भिन्न बौद्धिक क्रियाओं में एक सामान्य बुद्धि के बच्चों की उपलब्धि से हमेशा अधिक होती है और एक मानसिक दुर्बल बच्चे की उपलब्धि सामान्य बच्चे की उपलब्धि से हमेशा कम होती है।